ओम गणाधि गणपतये नमः

आज गणेश को विनायक, सिद्धि विनायक, लम्बोदर, विघ्नहर्ता, एक दन्त वाला, मूषक सवार आदि-आदि नामों से जाना जाता है। ऐसे दयावन्त गणेश को हम सभी देखते आये हैं। हर साल देखते ही हैं, लेकिन वो एक मूर्ति प्रतीकात्मक रूप से हमारे सामने है। आज तक साइंस भी इस बात का समाधान नहीं ढूंढ़ पाई कि एक मनुष्य के शरीर का कोई अंग दूसरे मनुष्य के शरीर में शिफ्ट किया जाए तो एकदम से वो उसको स्वीकार कर ले। इसके लिए भी कितनी प्रिकॉशन्स लेनी होती हैं। लेकिन कई बार ये सफलता पा लेता है और कई बार नहीं पाता। ऐसे में किसी मनुष्य के धड़ पर हाथी का सिर हो, तो उसे कैसे स्वीकार करेगा! मेडिकल साइंस के पास इसका कोई जवाब नहीं है। आज हम आधुनिकता में जी रहे हैं। अपने आप को आधुनिक समाज का कहते हुए भी हमने ये स्वीकार किया है कि एक मनुष्य के धड़ पर हाथी का सिर आराम से स्थित हो सकता है। आज सिद्धि-विनायक के मंदिरों में इतनी शक्ति है कि वहाँ बड़े-बड़े डॉक्टर, इंजीनियर, समाज के बुद्धिजीवी लोग जाकर माथा टेकते हैं और ऐसा कहते हैं कि हमारी मनोकामना पूरी हो जाती है। दुनिया में अगर किसी बच्चे के एक्स्ट्रा हाथ-पैर हो जाएं या पैदा होते ही कोई अंग बढ़ जाए तो ऑपरेशन कराने के लिए लोग भागदौड़ शुरू कर देते हैं, लेकिन चार हाथ-आठ हाथ वाले देवी देवताएं हमको स्वीकार हैं। हमें लगता है कि वो मूर्ति है

कहावत यह है कि हमेशा सबकी बातों को समाकर रखने वाला बहुत शक्तिशाली होता है। लेकिन उन्हीं बातों को अगर कोई कहीं कह दे तो सबकुछ बिगड़ जाता है। विघ्न, समस्यायें एक उदरशूल की तरह हैं, जो कभी भी एक छोटी-सी बात से पूरे समाज में हड़कंप सी मचा देती है। आज हर एक व्यक्ति ऐसे लम्बोदर की तलाश में है जो सबको समा ले और किसी से कुछ न कहे। क्या हम भी ऐसे विघ्नहर्ता बन सकते हैं? या इस गणेश उत्सव पर सिर्फ विघ्नहर्ता की पूजा ही करेंगे! आओ इसकी कुछ युक्ति रखते हैं।

इसलिए शायद लोगों ने इसे स्वीकार किया हुआ है। अगर वो भी जीवंत होती तो उसको स्वीकार करना हमें मुश्किल होता। मानव की मनोदशा आज इतनी विक्षिप्त है कि मान्यताओं और परम्पराओं को लेकर ही आज मनुष्य आगे बढ़ रहा है। जहाँ वो देख रहा है कि थोड़ा भी हमें कुछ मिल रहा है, थोड़ी-सी प्राप्ति हो रही है, वो उस देवता को या मंदिर को फटाफट स्वीकार करके वहाँ पहुंच जाता है। सभी के संकल्पों का बल उसे वहाँ पर प्राप्ति कराता है, ना कि उस मूर्ति के अंदर ऐसी कोई ताकत है।

गणेश को देवताओं में सबसे श्रेष्ठ माना जाता है। उसको श्रेष्ठ मानने का आधार क्या हो सकता है? क्योंकि जब मनुष्य इतना विक्षिप्त है, उसको समझ में कुछ नहीं आ रहा है, ऐसे में ऋषि-मुनि तपस्वियों ने सबसे समझदार मनुष्यों के बाद कोई प्राणी आता है तो वो है हाथी, तो उन्होंने हाथी के सिर को मनुष्य के धड़ पर रखा और एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व बनाने की प्रेरणा ली।

मनुष्य जब कभी भी गणेश के चित्र के सामने जाता है तो उसको कभी भी एक मानव का दर्शन नहीं होता, उसमें एक जानवर है और दूसरा एक मनुष्य है। तो लोग दर्शन तो सबसे पहले हाथी का ही करते हैं। इसका प्रतीकात्मक बनने के पीछे एक रहस्य है। हाथी बहुत सतर्क होता है, सूंड लम्बी होती है जिससे वो पहले से ही हरेक चीज को फूंक-फूंक के परख लेता है कि ये चीज ठीक है या नहीं है। तो ये सतर्कता का प्रतीक है। मनुष्य को भी दूर से ही हरेक चीज को परखकर चलना चाहिए। इसके अलावा हाथी के कान बहुत बड़े-बड़े होते हैं जिसका अर्थ है कि कोई भी व्यर्थ की बातों को ज्यादा नहीं सुनना, उसे उड़ा देना, समर्थ बातों का ही सेवन करना।

हाथी की आँखें छोटी दिखाई जाती हैं, उसका अर्थ है स्वयं को देखना या सबको महान देखना क्योंकि हाथी की आँखों में सिलिन्ड्रिकल लेंस होते हैं, जिससे वो सभी को डबल देखता है और इस कारण किसी पर अटैक नहीं करता। इसलिए हम मनुष्य आत्माओं को भी सभी को बड़ा देखना है, महान देखना है।

हाथी का पेट बहुत बड़ा होता है। पेट बड़ा होना सुख की निशानी है और सुख वही प्राप्त कर सकता है जो सबकी बातों को समा ले, स्वीकार कर ले। हमेशा मोदक खाने का अर्थ है कि निरंतर मुख से मिठास ही बाहर आये। उनकी सवारी चूहा दिखाया। अब इतना बड़ा गणेश और इतना सा चूहा, अगर सचमुच गणेश जी उसपर बैठ जायें तो उसका क्या हाल होगा! चूहा माया की निशानी है, जो पहले फूंकता है फिर काटता है और मनुष्य को पता भी नहीं चलता। ऐसे ही जब कोई बात छोटी-सी माया की हमारे पास आती है, तो वो हमको लगती बहुत छोटी है, लेकिन वो धीरे-धीरे हमारे साथ-जुड़ते-जुड़ते बहुत बड़ी हो जाती है अगर उसपर ध्यान नहीं दिया जाये तो। इसलिए माया रूपी चूहे पर हमेशा सतर्क रहना या उसको अपने वश में रखना, उसकी सवारी करना है, अगर हमने आँख-नाक, कान-मुँह, इन सबको अपने वश में रख लिया तो व्यर्थ तो वैसे ही समाप्त हो गया। ये मूल रूप से हमारी पंच इंद्रियां हैं जिनको जो जितना वश में रखता है उतनी समस्या नहीं आती, उतने विघ्न नहीं आते। इसलिए इस गणेश चतुर्थी पर हम सभी इसके मूल अर्थ को समझ करके अपनी इंद्रियों पर संयम रखें और स्वयं अपने आप को निर्विघ्न बनाकर, घर को भी निर्विघ्न बनाकर साथ में समाज के हर एक व्यक्ति को निर्विघ्न बनाकर पूरे विश्व में निर्विघ्न स्थिति ला दें। यही गणेश चतुर्थी के साथ सच्चा न्याय होगा।

भरतपुर-राज.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. कविता दीदी, आगरा सबज़ोन सह प्रभारी, ब्र.कु. बबीता, रूपवास, ब्र.कु. हीरा बहन, ब्र.कु. पूनम, सेवरी, ब्र.कु. गीता, बैर, मानस सिंह, आई.एफ.एस. निदेशक बर्ड सेंचुरी, भरतपुर, राहुल सैनी, एडीएम सिटी, भरतपुर, श्रीमती डॉ. इन्दु शर्मा, जिलेविक्ष निदेशक आयुर्वेद विभाग संभाग, गणपत सहायक, कमांडेंट 9वीं आर.ए.सी. बटालियन, राकेश सिंह, वरिष्ठ अधिवक्ता तथा अन्य।

दिल्ली-लोधी रोड। विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में भारत सरकार की सबसे मूल्यवान कंपनियों में से एक ओएनजीसी लिमिटेड के नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय मुख्यालय में आयोजित 'प्रकृति के साथ सामंजस्य' विषयक संगोष्ठी में मंचासीन हैं अरुण कुमार सिंह, अध्यक्ष एवं सीईओ, आर गुप्ता, प्रबंध निदेशक, ओएनजीसी विदेश लिमिटेड, मनीष पाटिल, निदेशक मानव संसाधन, राजयोगी ब्र.कु. पीयूष, प्रोजेक्ट संयोजक, वैज्ञानिक, अभियंता व वास्तुकार प्रभाग एवं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गिरिजा। साथ हैं प्रतिभागी प्रतिनिधित्व करते हुए।

जयपुर-बापूनगर(राज.)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर मैरियट होटल में आयोजित कार्यक्रम में योगाभ्यास के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. जयंती, ब्र.कु. पद्मा तथा अन्य प्रतिभागी भाई-बहनें।

मोकामा-बिहार। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर भारत सरकार के आयुष मंत्रालय के सहयोग से मोकामाघाट स्थित दिनकर द्वार मैदान में आयोजित कार्यक्रम में युवा लक्ष्य डिफेंस एकेडमी के प्रतिभागी बच्चों के साथ स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. निशा, ब्र.कु. नेहा, ब्र.कु. पवन, युवा लक्ष्य डिफेंस एकेडमी के ट्रेनर अजीत कुमार, मनु कोचिंग सेंटर के निदेशक मनु कुमार तथा अन्य।